रिश्ते मौके नहीं, भरोसे के मोहताज होते है।
– अज्ञात

अध्यक्ष को लिखे पत्र ने खलबली मचा दी

कुछ समय पहले कांग्रेस के 23 वरिष्ठ नेताओं द्वारा पार्टी अध्यक्ष को लिखे पत्र ने खलबली मचा दी थी। इसके जवाब में न केवल कांग्रेस वर्किंग कमिटी की विशेष बैठक बुलाई गई बल्कि पत्र से आहत सोनिया गांधी ने उसमें इस्तीफे की पेशकश भी कर दी।

ममता शाह।।

कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने बीते शुक्रवार को पार्टी संगठन में जो बदलाव किए हैं, वे न सिर्फ पिछले दिनों दिखी असंतुष्ट गतिविधियों के संदर्भ में बल्कि पार्टी के आने वाले दौर के लिहाज से भी अहम माने जा रहे हैं। कुछ समय पहले कांग्रेस के 23 वरिष्ठ नेताओं द्वारा पार्टी अध्यक्ष को लिखे पत्र ने खलबली मचा दी थी। इसके जवाब में न केवल कांग्रेस वर्किंग कमिटी की विशेष बैठक बुलाई गई बल्कि पत्र से आहत सोनिया गांधी ने उसमें इस्तीफे की पेशकश भी कर दी। संगठन में किए गए ताजा बदलावों पर उस घटनाक्रम का असर साफ देखा जा सकता है, लेकिन ब्यौरे में जाने के बाद इसे असंतुष्टों को सजा देने या उनसे बदला लेने का प्रयास नहीं कहा जा सकता। पत्र लिखने वालों में सबसे बड़ा नाम गुलाम नबी आजाद का था और उनका नाम उन पांच नेताओं में है जिन्हें पार्टी महासचिव पद से हटाया गया है। लेकिन उन्हें कांग्रेस वर्किंग कमिटी में बनाए रखा गया है।

दूसरी तरफ, पत्र पर दस्तखत करने वालों में शामिल मुकुल वासनिक को उस विशेष समिति में शामिल किया गया है जो एआईसीसी के अगले अधिवेशन तक पार्टी अध्यक्ष के कार्यों में सहायता देने के लिए गठित की गई है। सोनिया गांधी ने सेंट्रल इलेक्शन अथॉरिटी गठित करने की भी घोषणा की है जिसका मतलब यह है कि नया पार्टी अध्यक्ष चुनने के लिए संगठन चुनाव जल्द ही होंगे। साफ है कि पार्टी नेतृत्व असंतुष्ट नेताओं के पत्र में उठाई गई चिंताओं को महत्व देता दिख रहा है। यह सोनिया गांधी द्वारा वर्किंग कमिटी में व्यक्त की गई इस भावना के अनुरूप है कि 'मैं आहत जरूर हुई हूं, लेकिन अब आगे बढ़ा जाए।'

बहरहाल, इन बदलावों से जो दूसरा और ज्यादा महत्वपूर्ण संदेश निकल रहा है वह है युवा और खासकर राहुल गांधी के करीबी नेताओं को दिया गया महत्व। संगठन चुनावों के लिए बनाई गई समिति की अध्यक्षता भी मधुसूदन मिस्त्री को सौंपी गई है जो राहुल गांधी के विश्वासपात्र माने जाते हैं। जो तीन नए महासचिव बनाए गए हैं– तारिक अनवर, रणदीप सिंह सुरजेवाला और जितेंद्र सिंह– उनमें भी दो सुरजेवाला और सिंह राहुल के करीबी समझे जाते हैं। साफ है कि राहुल गांधी के इस्तीफे के बाद जो यह धारणा बनने लगी थी कि कांग्रेस में अब गांधी परिवार से बाहर के अध्यक्ष का दौर आएगा और पार्टी गांधी परिवार के आभामंडल से बाहर निकल कर अपना अलग रास्ता बनाएगी, वह सच होती नहीं दिख रही।

नया अध्यक्ष जो भी हो, पार्टी पर राहुल गांधी की मजबूत पकड़ बनी रहेगी। पार्टी के सामने और खुद राहुल गांधी के सामने भी चुनौती यह साबित करने की है कि उनकी इस पकड़ का मकसद पार्टी को अपनी जेब में रखना नहीं बल्कि उसे शक्तिशाली बनाना है।

कांग्रेस को वापस जनसंघर्षों की पार्टी बनाने में इससे कितनी मदद मिलती है और चुनावों में वह कितनी ताकत से खड़ी रह पाती है, सांगठनिक बदलावों के मूल्यांकन की असली कसौटी यही होने वाली है।

मंत्रोच्चारण की ध्वनि

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। दूर से ही मंत्रोच्चारण की ध्वनि कानों में आने लगती है। श्रीअमरनाथ का मंदिर वस्तुतः एक प्राकृतिक गुफा है, जो पचास फीट लंबी, पचपन फीट चौड़ी और पैंतालीस फीट ऊँची है। इसकी बाईं ओर अमर गंगा बहती है। मंदिर में प्रवेश करने से पहले लोग अमर गंगा में स्नान करते हैं। गुफा के भीतर जाने पर पचास फीट तक सीधा और फिर टेढ़ा–मेढ़ा मार्ग है। गुफा के भीतर शीत बहुत अधिक है। गुफा में दाईं ओर शिव का प्रतीक पाँच फीट का शिवलिंग है, बर्फ–सा श्वेत, नहीं सचमुच बर्फ का बना हुआ। इसके बाईं ओर पार्वती का प्रतीक छोटा हिमखंड है और दाईं ओर का हिमखंड गणेश का प्रतीक है। ये लिंग चंद्रमा के बढ़ने के साथ बढ़ते और चंद्रमा के घटने के साथ घटते हैं। श्रावण और भाद्रपद की पूर्णिमाओं के दिन ये सबसे बड़े आकार में होते हैं।

संपादकीय

नीतीश का कोर वोटर

नीतीश कुमार को अपने कोर वोटर की बदौलत चौथे टर्म के लिए जनादेश पाने की उम्मीद है। उन्होंने महिलाओं पर पूरा फोकस करके संदेश दिया कि इस चुनाव में भी उनसे उम्मीद है। दरअसल 2005 से अब तक महिलाएं और महादलित उनके साइलेंट कोर सपोर्टर रहे हैं। खासकर महिलाएं उनके लिए सबसे बड़ा एक्स फैक्टर बनकर सामने आती रही हैं। नीतीश कुमार जब 2005 में सत्ता में आए, तो उन्हें पता था कि जातीय समीकरण में उलझी राज्य की राजनीति में उनकी जाति का बड़ा आधार नहीं था। इसीलिए उन्होंने अपना विस्तार महिलाओं और महादलित–अति पिछड़ों के बीच किया। तबसे लेकर अब तक नीतीश कुमार की जीत में महिला वोटरों ने अहम भूमिका निभाई है। वे हर बार अपनी पार्टी के घोषणापत्र में महिलाओं के लिए खास वादे करते रहे हैं, और हर बार वह निर्णायक साबित होता रहा है। पिछली बार शराबबंदी और सरकारी नौकरियों में 35 फीसदी आरक्षण देने का वादा किया था। चुनाव बाद आए तमाम सर्वे में बताया गया कि 60 फीसद से अधिक महिलाओं ने नीतीश के पक्ष में वोट किया। उसी तरह 2009 की बड़ी जीत में सभी स्कूल जाने वाली लड़कियों को साइकिल देने की योजना नीतीश के लिए चुनाव जिताऊ फैक्टर साबित हुई थी।

कोरोना महामारी में चुनाव आयोग की ओर से तय समय पर चुनाव कराने के बारे में ऐलान होने के बाद सभी दल चुनावी अभियान को अंतिम रूप देने में जुट गए हैं।

चुनावी खेल का आगाज

नरेंद्र नाथ ।।

बिहार की सियासी पिच पर चुनावी खेल का आगाज हो चुका है। कोरोना महामारी में चुनाव आयोग की ओर से तय समय पर चुनाव कराने के बारे में ऐलान होने के बाद सभी दल चुनावी अभियान को अंतिम रूप देने में जुट गए हैं। 15 सालों से सत्ता में जमे नीतीश कुमार जहां एंटी इनकंबेंसी को काउंटर करने के लिए अपने अभियान की औपचारिक शुरुआत सोमवार से कर चुके हैं, वहीं एंटी इनकंबेंसी के दम पर राज्य में सत्ता हासिल करने की कोशिश में तेजस्वी यादव के नेतृत्व में जुटी आरजेडी ने भी चुनावी अभियान की शुरुआत कर दी है। दोनों नेताओं ने शुरुआत में ही संकेत दे दिया है कि वे किन मुद्दों के साथ चुनाव में आने वाले हैं।

आरजेडी ने तेजस्वी यादव को चेहरा बनाते हुए अपना चुनाव प्रचार सोमवार से शुरू किया। इसमें पार्टी ने नारा दिया कि नई सोच– नया बिहार, अबकी बार– युवा सरकार। दरअसल आरजेडी ने पिछले कुछ दिनों से अपना चुनावी प्रचार युवाओं पर केंद्रित किया है। पार्टी ने सत्ता में आने पर डेढ़ लाख सरकारी पदों को भरने का वादा किया है। पार्टी इस बार युवाओं के रोजगार की समस्या को सबसे बड़ा मुद्दा बनाने का ऐलान कर चुकी है। पार्टी ने बेरोजगार युवकों के लिए

एक पोर्टल भी लॉन्च किया। पार्टी ने कहा है कि इस पोर्टल पर बिहार के युवा चुनाव से पहले अपना नाम रजिस्टर करा सकते हैं। पार्टी ने वादा किया है कि अगर वह सत्ता में आई, तो इसे डेटा बेस मानकर नौकरी देने का बड़ा अभियान शुरू करेगी और पहले साल में डेढ़ लाख युवकों को रोजगार देगी। इसके लिए टोल फ्री नंबर भी बनाया गया है। पार्टी ने दावा किया कि इस पोर्टल के लॉन्च करते ही उस पर बहुत अच्छा रेस्पॉन्स आया है। पार्टी नेता मनोज झा ने कहा कि चुनाव में युवाओं का मुद्दा आरजेडी के लिए सबसे अहम रहेगा। इसके अलावा पार्टी कुछ छात्र संगठनों की ओर से सरकारी पदों को भरने में नाकामी का आरोप लगाकर किए जा रहे आंदोलन के पक्ष में आक्रामक रूप से आ गई है।

दरअसल, तेजस्वी यादव के लिए युवाओं को साथ लेना सियासी विकल्प के साथ सियासी मजबूरी भी है। पिछले कुछ चुनावों में आरजेडी को अपने पारंपरिक वोट बैंक– मुस्लिम और यादव के बाहर लगभग नहीं के बराबर वोट मिलते रहे हैं। बीजेपी और जेडीयू मिलकर बाकी वोटों में बड़ा हिस्सा लेकर चुनाव जीतते रहे हैं। 2015 में जब नीतीश लालू के साथ मिले, तब आरजेडी को जीत मिली। 2005 के बाद आरजेडी के लिए हर बार यह दिक्कत रही है। इस बार वोट के सीमित दायरे से निकलने के लिए ही तेजस्वी ने वाई फैक्टर पर भरोसा किया। पार्टी नेताओं के अनुसार अभी पूरे राज्य में युवा बेहद नाराज हैं। इसके अलावा लॉकडाउन के चलते देश के अलग–अलग हिस्सों से जो लोग आए, उनमें अधिकतर युवा हैं और वे बेरोजगार हैं। बाहर से आने वालों की तादाद 20 लाख से अधिक बताई जा रही है और माना जा रहा है कि इनमें से अधिकतर इस बार वोट देकर ही वापस जाएंगे। इनका वोट निर्णायक हो सकता है। जानकारों के अनुसार अगर इस तबके को तेजस्वी यादव अपने पक्ष में करने में सफल रहे, तो वे नीतीश के सामने गंभीर चुनौती पेश कर सकते हैं। लेकिन यह इतना आसान नहीं होगा। युवाओं से कनेक्ट करने के अलावा तेजस्वी यादव को रोडमैप भी पेश करना होगा कि किस तरह वे उनके लिए रोजगार के अवसर बनाएंगे।

सूडोकु नवताल-5474

सरल

	9				6			
4	7				8	3		9
		8	7	3		1	2	
	8	9		5	1		7	6
5	1		8	7		4	9	
	2	4		6	5	7		
7		1	3				5	8
			1				4	

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5473 का हल

1	9	3	7	5	4	2	6	8
8	4	2	1	6	3	9	7	5
5	7	6	8	2	9	3	1	4
4	1	5	6	3	2	8	9	7
7	2	9	4	8	1	6	5	3
3	6	8	5	9	7	1	4	2
2	5	1	9	4	8	7	3	6
9	8	4	3	7	6	5	2	1
6	3	7	2	1	5	4	8	9

अपना ब्लॉग

अभी तक खुलासा नहीं किया गया

मोहन। महिलाओं का फैक्टर इसलिए भी अहम है क्योंकि पिछले डेढ़ दशक में बिहार में हुई महिलाओं की वोटिंग में पिछले चुनाव में 25 फीसदी की वृद्धि हुई। नीतीश कुमार की जीत में इस बढ़ी वोटिंग का अहम योगदान रहा था। अब इस बार चुनाव में नीतीश कुमार को इसी फैक्टर से बहुत उम्मीद है। नीतीश कुमार के करीबी रणनीतिकारों का दावा है कि हर बार चुनाव से पहले उनके बारे में नकारात्मक बातें होती हैं, लेकिन जब परिणाम सामने आता है तो सभी हैरान रहते हैं। उनका दावा है कि साइलेंट वोटर इस बार भी उनके साथ जुड़े रहेंगे। लेकिन इस बार उनके लिए क्या बड़ा वादा होगा, इसका अभी तक खुलासा नहीं किया गया है। हालांकि पार्टी ने दावा किया कि हर बार की तरह इस बार भी जब पार्टी अपना घोषणापत्र लाएगी, तो उसमें महिलाओं के लिए बहुत बड़ा वादा होगा।